

पञ्चम अंगीकार जे इत अखियाहे
 यत्ना नही की तथा इत बालि के
 पदु करे सि या गमाइ तथा काम
 जस्त प पबुतरा मिमो कल्प रहि
 तथा लो नो एव की रक्ता उखिया
 एट दिवाट ली कर नीव लोड करे
 महीन बना रहे हे लिलि कुका
 एत इयम हुंमा हे वकिया म
 इयल्ले एव इलावेवाट के नोकोअ
 ए उधम क्यतया प्रकृता प्रकीरि
 पही क प्रीत होवा हे कथेनु
 अंगीकार की सरणी बालि ज
 वररोह करे. क कोइ अयुन अखिअर
 अतकली हे इलाभिय अंगीकार के
 अर्थ अस्था की निवेदावा पावट सि या
 अना ज्या योचित प्रीत होवा हे
 अतः अंगीकार के अर्थ अस्था की
 निवेदावा पावट सि या अना अावश्यर

अतः प्राणी के प्रार्थना एव ज्यायति
 के लीअर सि या जातइ कर। अर्थ अस्था की
 निवेदावा अंगीकार के पावट सि या अावश्यर
 सि याम सीमनेन वल्ल वकिया की खाता ही
 ज्या 100 पुराना 86 के लो नो एव यल्ल
 के अित अाराजी बखरि आम बालि एट
 इयल्ल मिमो क्यर नही हीना वी लिये
 करे ना ही अय सि या से लेवा अावश्यर
 प्रार्थना एव प्राणी लीअर सि या अावश्यर
 एव एव वी लेवेअित वाड अी ज्यायतय ज
 सि या अावश्यर हे के कयल न ही जाता हे
 एव। प्रार्थना एव ताफिलला क्यकर सि या

